Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art
Vol. VI 2015
ISSN (P) : 0976-7444
(e) : 2395-7247

सौन्दर्य शास्त्र : कला और विज्ञान

7

डॉ0 सुमन लता शर्मा*

ऐस्थेटिक शब्द यूनानी भाषा से लिया गया है, जिसका मूल रुप **"Atoantikas"** है। यही यूनानी शब्द बाद में **'ऐस्थेसिस'** हुआ, जिसका अर्थ है – **'ऐन्द्रिय सुख की चेतना'** इसी ऐस्थेसिस शब्द से **'ऐस्थेटिक'** शब्द बना। हिन्दी भाषा में इसे 'सौन्दर्यशास्त्र' के रुप में जाना जाता है। ऐस्थेटिक्स का शाब्दिक अर्थ है – ऐन्द्रिय प्रत्यक्षों का ज्ञान के माध्यम से किया गया अध्ययन। बाद में 'ऐस्थेटिक्स' उस शास्त्र को कहा जाने लगा, जो ऐन्द्रिय बोध से प्राप्त प्राप्त सौन्दर्यानुभूति के आत्मिक आनन्द का विश्लेषण करता है।

1750 ई0 में जर्मन विद्वान ऐलेक्जेण्डर बाउमगार्टेन ने इसे दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रुप में स्वीकार किया तथा अपने ग्रंथ 'ऐस्थेटिक' में सौन्दर्य तथा कला का क्रमबध विवेचन करने वाले इस षास्त्र को सौन्दर्यशास्त्र के नाम से संबोधित किया तथा इसे शास्त्र के रुप में **"सौन्दर्यशास्त्र ऐन्द्रिय ज्ञान का विज्ञान"** है कहकर परिभाशित किया।

किसी विषय का उद्भव जिन प्रमुख मान्यताओं को लेकर होता है अपने विकास काल तक पहुँचते–2 उनकी मान्यताओं में थोड़ा परिवर्तन होता रहता है। ऐसी ही स्थिति सौन्दर्यशास्त्र के विषय में भी रही है। **'बाउमगार्टेन'** ने अपने चिन्तन में सौन्दर्य और सौन्दर्यबोध को प्रमुख विषय माना जबकि प्रसिद्ध दार्शनिक **'काण्ट'** ने प्राकृतिक सौन्दर्य से उत्पन्न अनुभूति को अपने विवेचन का प्रमुख विषय बनाया **'हेवेल'** ने इसे सौन्दर्य और कला से संबंधित कर सौन्दर्य और कला संबंधी दर्शन बनाने का कार्य किया। उनका मत था कि ईष्वर ही एकमात्र पूर्ण तत्व है जो सत्य, शिव और सुन्दर है। इसी की अभिव्यक्ति प्रकृति, जीवजगत और मानव द्वारा सृजित कृत्रियों में होती है। कलाकार तो कलात्मक प्रतिभा के ईश्वर के सौन्दर्य को रूपायित करता है, इन्हीं मान्यताओं की पूर्ति हेतु सौन्दर्यशास्त्र कला और सौन्दर्य का षास्त्र बना।

सौन्दर्य का अनुभव व्यापक और महत्वपूर्ण है। इससे हृदय सरस और जीवन उर्वर होता है; बुद्धि को नवीन चेतना और कल्पना को सजीवता प्राप्त होती है। इस महत्वपूर्ण अनुभूति का परिशीलन करने, इसके स्वरुप और स्वभाव को समझने, जीवन की दूसरी अनुभूतियों के साथ इसका संबंध स्पष्ट करने तथा इसकी पुष्ट और रचनात्मक शक्ति को समझने के लिये जिससे कला का जन्म होता है, हमें एक विशेष विचारमाला की आवश्यकता होती है। इस व्यवस्थित विचार माला को हम सौन्दर्यशास्त्र कहते हैं।

सौन्दर्य से जो आनन्द उत्पन्न होता है उसे हम रस कहते हैं। सौन्दर्य में आनन्द जिस तत्व का नाम है वास्तव में वह रस आस्वादन की विशेष क्रिया है। आस्वादन क्रिया में 'रसिक' और सुन्दर वस्तु में 'तन्मयता' अवश्य होनी चाहिये। **प्लेटो के अनुसार – 'सौन्दर्य भाव की**

**असि0 प्रोफे0, संगीत विभाग, आर0जी0 (पी0जी0) कॉलिज, मेरठ*

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

अभिव्यंजना है'। इसके अनुसार सुन्दर शिव और सत्य एक है। सुन्दर 'परम' है और पूर्ण है। सौन्दर्य का ज्ञान ही प्रामाणिक ज्ञान है क्योंकि यह सत्य के अधिक निकट है। इसकी एक परम सत्ता है, जो प्रत्येक सुन्दर वस्तु में प्रतिबिम्बित होती है। सुन्दर वस्तु शाश्वत नहीं है। आवश्यक नहीं कि कोई सुन्दर वस्तु सदैव सुन्दर लगे **'कीट' के अनुसार – 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम् ही सौन्दर्य है।**

सौन्दर्य में भोग, रुप और अभिव्यक्ति तीनों तत्वों का समावेश होता है। संगीत में हम ध्वनि या नाद का भोग करते है, नाद में भी भोक्ता मधुर और चित्र–द्रावक नाद को ग्रहण करता है। नाद अत्यन्त कोमल और मधुर माध्यम है। स्वरों के विन्यास से संगीत में 'रुप' का उदय होता है, यह रुप दृश्य नहीं, श्रव्य होता है, किन्तु इसमें रुप के संपूर्ण गुण विद्यमान होते हैं, रुप के इन गुणों को ही हम सापेक्ष, सन्तुलन और संगति के नाम से पुकारते हैं। संगीत के रुप में एक विशेषता है जो अन्य 'रुपों' में इतनी स्पष्ट नहीं होती वह यह कि इसमें 'लयात्मक गति' तीव्र होती है। संगीत में स्वर और गति आदि इतने प्रभावशाली, कोमल और मधुर माध्यम हैं कि मानव जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव, उदात्त कल्पनाएँ, चेतना के सभी रुप इनके द्वारा अभिव्यक्त किये जा सकते हैं।

कला सौन्दर्य साधना है। सौन्दर्य में एक अनूठी आकर्षण शक्ति है, उसकी ओर मन का सहज रुझान होता है। वास्तव में सौन्दर्य को मानव का सहज गुण भी कहा जा सकता है। कला का उद्‌गम 'कल' धातु से निष्पन्न होता है, इसका अर्थ है चलना, गति, स्पन्दन। कला ने सभ्यता को आदिकाल से सौन्दर्य – श्रृंगार – साज – सज्जा से सजाया सँवारा है। कला भाव प्रधान होने के कारण मन को गहराई तक प्रभावित करती है। इसीलिये यह माना जाता है कि सौन्दर्य अथवा मनोहारी रुपों में मनोभावों को रुपित करना मनुष्य का स्वभाव है, मानवता का पर्याय है, प्रमाण और माप है।

कला का मूल अन्ततः आत्मा है। आत्म साक्षात्कार करने वाले मंत्रदृष्टा ऋषियों ने सत्य का साक्षात्कार किया था, उन्होंने सत्य को देखा था। उन्होंने बताया कि आत्मा मनबुद्धि की पहुँच से भी पार है। वहाँ वाणी भी नहीं पहुँचती। इन्द्रियाँ तो स्वभाव से ही बाहर की ओर दौड़ने वाली हैं। आत्मा के दर्शन का उत्कट अभिलाषी तो कोई धीर होता है, जो आवृत्त चक्षु–इन्द्रियों को अन्तर्मुखी बनाकर प्रत्यक् आत्मा का दर्शन करता है। वह आत्मा जो ज्योतिर्मय और आनन्दस्वरुप है, उसी धीर प्रेमी के सामने अपने आप का उद्‌घाटन करती है, जैसे प्रिया अपने प्रियतम के सम्मुख।

प्रकृति के सौन्दर्य से प्रभावित मानव आदिकाल से ही आनन्द की खोज में सतत् प्रयास करता आया है। आनन्द की अभिव्यक्ति कला है जो भिन्न–2 रुपों में मानव का कल्याण करती है। कला की अभिव्यक्ति में कलाकार अपनी संपूर्ण शक्तियों का (कल्पना, प्रतिभा, कलात्मक कुशलता) उपयोग कर कला का सृजन करता है, जिसमें संतुलन लयबद्धता तथा पूर्णता आदि गुण होते हैं इन सब गुणों से प्राप्त होने वाली अभिव्यक्ति सौन्दर्यानुभूति है, कला के दो भागों में बाँटा गया है – उपयोगी कला व ललित कला। उपयोगी कला हमारे दैनन्दिन जीवन में

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

उपयोग में आने के कारण मानव को शारीरिक और भौतिक आनन्द प्रदान करती है तथा ललित कला मानव को आत्मिक आनन्द प्रदान करती है। ललित कलाएँ पाँच हैं – स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला, काव्यकला और संगीतकला। इसमें संगीतकला को सर्वोपरि ललित कला माना जाता है। जिस कला में कम से कम सामग्री (साधन) व अधिक से अधिक अभिव्यक्ति होती है वह उतनी ही उच्च मानी जाती है। इस दृष्टि से संगीत कला सर्वोपरि है, जिसकी अभिव्यक्ति का माध्यम अति सूक्ष्य सात स्वर व कुछ छंद है, जिनका कोई आकार, रुप नहीं है। इससे मानव ने अपने बुद्धि चातुर्य के बल पर चमत्कारपूर्ण असंख्य रागों व तालों को जन्म दिया। इतनी कम सामग्री से इतने असीमित भण्डार का निर्माण मानव मस्तिष्क की उपज ही तो है।

ललित कलाओं का उद्देश्य सौन्दर्यानुभूति के विषय का सृजन करना है। इनका लक्ष्य केवल आकर्षण ही नहीं, सौन्दर्यानुभूति के द्वारा कलाकार और रसिका को आनन्दानुभूति की प्रतीति करना है। यह अनुभूति कलाकार और प्रेक्षक, संगीतज्ञ और श्रोता, कवि और रसिक सभी को परमतत्व की प्रतीति का सुयोग प्रदान करती है। ललित कलाओं का मूल्य सार्वभौतिक है। यह मूल्य पुराना होकर समाप्त नहीं होता वरन् किसी राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर के रुप में गौरव प्रदान करता रहता है। ये अभिव्यक्तियाँ सौन्दर्य के शाश्वत रुप मानी जाती है।

कला सृजन का चेतन माध्यम कलाकार है, कलाकार द्वारा सृजित कलाकृति में कलाकार के आदर्श, उसकी उच्चता, अनुभूतियों की सत्यता, कल्पनाओं की स्वच्छता, उसकी वेदना, अवसाद और जीवन की सरलता–सरसता के साथ–साथ उसके चरित्र के सौरभ का समावेश होता है। परिणामतः असाधारण, प्रेम, आनन्द, विनय, भक्तिभाव जागृत होते हैं, नूतन आदर्षों का उदय होता है। इस स्थिति में उसकी कला उच्चतम लक्ष्य को प्राप्त कर लेती है। कलाकार की सृजित कृति उसकी आत्मिक उच्चता का प्रत्यक्षीकरण कराती है।

विज्ञान मानसिक प्रक्रिया पर आधारित है जो एक निश्चित नियम पर टिका हुआ होता है। विज्ञान से तात्पर्य स्थिरता या स्थायित्व से है। प्रत्येक विषय की कुछ मान्यताएँ व सिद्धान्त स्थिर होते है, जिनसे रचनाकार विमुख नहीं हो सकता। इन निश्चित मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए अपने विषय के विकास क्रम को बनाये रखना ही रचनाकार का उद्देश्य होता है और इसी में उसकी सफलता भी है। संगीत भी नियमों पर आधारित है। किसी भी राग व ताल के नियम इसी प्रक्रिया पर आधारित है। सांगीतिक ध्वनियों में एक निश्चितता होती है। यह संपूर्ण सृष्टि ही एक निश्चित लय में चलती है। यदि यह निश्चितता न हो तो सृष्टि चलना ही असंभव हो जायेगा। हमारे शरीर की श्वाँस–प्रक्रिया एक निश्चित गति में चलती है। यदि एक पल का भी अन्तर हो जाये तो जीवन गति ही रुक जायेगी।

किसी क्रिया को बारम्बार करने पर भी जब उसके परिणाम एक समान होते हैं तो वह तथ्य वैज्ञानिक प्रमाण पर सही उतरता है। विज्ञान का सर्वमान्य तत्व संगीत के शास्त्र पक्ष से पूर्णतः संबंधित है। किसी ताल व राग लेखन शैली में मौलिक सिद्धान्तों में कोई परिवर्तन नहीं होता। जब हम किसी ताल व राग का विस्तार करते हैं तो ताल का ठेका, मात्रा ताली व खाली ज्यों की त्यों रहती हैं, केवल बोलों के उलटफेर की चमत्कारिता से हम ताल का विस्तार क्रमशः

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

उठान, पेशकार, कायदा, रेला व टुकड़े परण आदि के रुप में करते हैं। यही स्थिति राग विस्तार की है। इस प्रकार जब हम बार–बार ताल बजाते हैं या राग गाते हैं तो उनके मूल सिद्धान्तों की प्रामाणिकता में कहीं कोई अन्तर नहीं होता। वास्तव में जितने भी शास्त्र, कलायें, धर्म व विज्ञान आदि हैं वे किसी न किसी रुप में एक दूसरे से न्यूनाधिक रुप मे अवश्य जुड़े हुए हैं तथा एक दूसरे के सौन्दर्य की अभिवृद्धि में सहायक सिद्ध हुए हैं।

© *2015 Journal Anu Books.* Authors are responsible for any plagiarism issues.